International Journal of Applied Research 2016; 2(1): 137-139

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(1): 137-139
www.allresearchjournal.com
Received: 01-11-2015
Accepted: 04-12-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र

प्रेमचन्द के उपन्यासों में दलित चेतना

डॉ. शिवदत्त शर्मा

प्रेम चन्द समाज से जुडे उन लेखकों में से एक हैं जिन का जीवन समाज की हर अच्छी बुरी परिस्थिति से दोचार होकर ही आगे बढा है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि प्रेम चन्द जैसे लेखक समाज के विषपायी लेखक हैं जिन से समाज की कोई बुराई बच नहीं पाई है प्रायः प्रत्येक से उन्हें दो चार होना पडा है अथवा ऐसी बुराईयों के प्रत्यक्ष द्रष्टा रहे हैं। यही कारण है कि प्रत्येक ऐसे वर्णन में वे अत्यन्त स्वाभाविक लगते हैं जैसे यह घटना उनकी अपनी घटना हो। इस सन्दर्भ में होरी का चरित्र हो या किसी और का सब में उन्हें पूर्ण सफलता मिली हैं।

दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ कुचला हुआ, दबाया हुआ या पदाक्रान्त आदि होता है। साहित्य में उन सभी को दलित कहा जाता है जो शोषित हों। कुछ समीक्षक मानते हैं कि ऐसा वर्ग जो पिछले अनेक वर्षों से निचली श्रेणी में पशु के समान जीवन यापन करने को मजबूर हैं ऐसे मजदूर, अछूत, आदिवासी, तथा अनुसूचित जातियों के लोगों को दलित कहा जाता हैं। इन पर लिखा साहित्य दलित साहित्य कहलाता हैं। दलित साहित्य और चिन्तन से जुडे अधिकांश विद्वानों का मत है कि वास्तविक दलित साहित्य वही है जो दलितों द्वारा ही लिखा गया है। इसके संकुचित और वृहद् अर्थ में सूक्ष्म अन्तर है। फिर भी आज दलित साहित्य का भाव यही है जिसमे दलित और शोषित वर्ग का वर्णन हो।

मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों में दलित चेतना के अनेक उदाहरण सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। प्रेमचन्द को अपने समीप ही वनारस में इस प्रकार के कटु अनुभव हो गए थे। प्रेम चन्द का अधिकांश समय इसी वनारस के पिछडे लमही गांव में व्यतीत हुआ था। गोदान उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। उन्होंने गोदान उपन्यास का केन्द्र अवध प्रान्त के बेलारी को बनाया है। इस गांव में सभी जाति के छोटे बडे लोग रहते थे। यहां की पंचायत व्यवस्था बिखरी हुई थी। पंचायत में विकृति आने के कारण सामाजिक न्याय का सारा ताना बाना टूट चुका था। संयुक्त परिवार टुट कर बिखर रहे थे। गांव में झगडा आम बात हो गई थी। नारी जीवन उपेक्षित और दयनीय दिखाई देता है। विधवा विवाह, अवैध प्रेम संबन्ध, बहुविवाह, अनमेल विवाह आदि अनेक प्रसंग तात्कालीन सामाजिक रहन सहन को परिलक्षित करते हैं, जिन्हें उपन्यास कार ने सुन्दर ढंग से गोदान में चित्रित किया है। जमीदारी प्रथा के कारण किसानों की दयनीय स्थिति का कारुणिक चित्रण गोदान में चित्रित है। इस गांव में छुआछूत, जाति–पाति का प्रचलन है। ब्राह्मणों का वर्चस्व है जो अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए लोगों को मूर्ख बनाते हैं। दातादीन का पुत्र मातादीन सिलिया चमारिन से अवैध सम्बन्ध होते हुए भी कुलीन ब्राह्मण बना हुआ है जबकि गांव के दूसरे अछूतों को ब्राह्मणो की तरह यह सम्मान प्राप्त नहीं है। इसका समग्र चित्रण प्रेमचन्द के गोदान सहित अनेक उपन्यासों में देखने को मिलता है। दलितों के शोषण का चित्रण अन्य उपन्यासकारों ने भी अपनी क्षमता के अनुसार किया है, परन्तु जो चित्रण प्रेमचन्द ने अपने विभिन्न उपन्यासों में किया है वैसा अन्यत्र नहीं दिखाई देता। प्रेम चन्द दलितों के इस चित्रण में बिल्कुल सहज लगते हैं ऐंसा कहीं नहीं लगता कि यह एक औपन्यासिक घटना है बल्कि एक स्वाभाविक घटना की तरह उनका वर्णन प्रतीत होता है। 1 दलित शोषण किस प्रकार व्याख्यायित है उसका विशद वर्णन इन अनुषगों में किया जा सकता है–

1. अभावग्रस्त केवल दलित ही हैं–

गोदान के अधिकांश पात्र दलित ही हैं। बलेरी गांव की इस घटना में यह प्रमाणित होता है कि इस गांव के अधिकांश लोग उपेक्षित, अभावग्रस्त, और दीनहीन जीवन जीने को मजबूर हैं। गांव की दयनीय स्थिति और दीनता का मूल कारण निर्धनता है। इस गांव में स्मृद्ध लोगों का अभाव है। छोटे छोटे कच्चे मकानों में रहने वाले गरीब किसान अभावग्रस्त हैं। इसके साथ ही महाजनी शोषण की दोहरी मार इनको झेलनी पड रही है।एक ओर गांव के महाजन झींगुरीसिंह, मातादीन, अनोखेराम आदि उनका शोषण कर रहे हैं, दूसरी ओर नगर के रायसाहब, अमर पाल सिंह, और खन्ना आदि उनका खून चूस रहे हैं। इन शोषितों के नसीब में दिन भर खेतों में काम करके भी दो वक्त की

रोटी प्राप्त नहीं है। गोबर इसी तथ्य को अपने मुंह से इस प्रकार उजागर करता है–

गोबर कहता है– हम दाने दाने को मोहताज हैं। देह पर साबुत कपडे नहीं हैं। चोटी का पसीना ऐडी तक आता है, तब भी गुजर नहीं होता। गोबर का यह कथन सच्चाई से ओतप्रोत है। गांव के किसानों और मजदूरों की प्रायः ऐसी ही दयनीय हालत है। भेाला भी इसी प्रकार शोषण का शिकार है। अपनी दीन हीन स्थिति का वह स्वयं वर्णन करता है– कौन कहता है हम तुम आदमी हैं। हम में आदमियत कहां? आदमी वह है जिसके पास धन, अशियार, इलम है। हम लोग तो बैल हैं।इस प्रकार गोदान में अभाव ग्रस्त दलितों का स्वाभाविक चित्रण स्पष्ट झलकता है। 2

2. उपेक्षित एवं शोषित किसान–

शोषितों में अन्य लोगों की तरह किसानों की दुर्दशा भी गोदान में स्पष्ट उभर कर सामने आई है। इस उपन्यास में विशेषकर होरी किसान का जो स्वरूप सामने आया है उसे देख कर मन पसीज जाता है। होरी दिनरात खेतों में काम करता है, रात को रखवाली। परन्तु इतनी मेहनत के बावजूद उसके तन पर वस्त्र नहीं हैं नही ओढने को कम्बल उसके पास है। खेत में कडाके की ठण्ड में किस प्रकार वह रहता है पाठक सिहर उठते हैं अपने फटे पुराने कम्बल से शरीर को ढापने का असफल प्रयास करता है। प्रेम चन्द ने इस हालात का बडा सजीव चित्रण किया है–

वह कम्बल उसके जन्म से पहले का है। बचपन में अपने बाप के साथ वह इसी कम्बल में सोता था। जवानी में गोबर के साथ इसी कम्बल में उसके जाडे कटे थे। और आज बुढापे में भी वही उसका साथी है, पर अब वह भोजन को चबाने वाला दांत दहीं, दुखने वाला दांत है। 3

होरी की तरह गांव के सभी मजदूर, किसान इसी प्रकार की दयनीय स्थिति में किसी तरह अपना जीवन काट रहे हैं। उनकी दिनचर्या होरी की तरह रुला देने वाली है। यही कारण है कि गोबर गांव छोड कर नगर में चला जाता है जहां मजदूरी करने से कम से कम उसे भोजन तो प्राप्त हो सकेगा। इस तरह गांव में दो ही श्रेणियां हैं एक शोषित और दूसरी शोषक वर्ग। इनका सुन्दर वर्णन प्रेमचन्द द्वारा कलात्मक ढंग से किया गया है।

3. ऋृण ग्रस्त दलित–

प्रेमचन्द के सभी दलित पात्र ऋृण ग्रस्त हैं। ऋण चुकाने मेंउनका सम्पूर्ण जीवन समाप्त हो जाता है, परन्तु ऋृण समाप्त नहीं होता है। होरी की सारी फसल खलिहान से ही महाजन उठा लेते हैं फिर भी उसका ऋृण समाप्त नहीं होता। कभी लगान कभी नजराना कभी शगुन देना उनकी मजबूरी है। दशहरे के अवसर पर उसे रायसाहब के यहां शगुन देने जाना था तब भेाला से कहता है–

सब कुछ किफायत करके देख लिया भैया, कुछ नहीं होता। हमारा जन्म इसी लिए हुआ है कि अपना रक्त बहाएं और बडों का घर भरें। मूल का दुगना सूद भर चुका हूं पर मूल सिर पर ज्यों का त्यों सवार है।

इस तरह के हालात होरी ही नहीं उन सभी पात्रों के हैं जो दलित हैं तथा शोषण के शिकार हैं। महाजनी सभ्यता ने उनका खून चूस लिया है। प्रेम चन्द ने किसान की मजबूरी को स्वयं स्पष्ट किया है। प्रेमचन्द लिखते हैं कि ऋृण लेना किसान की मजबूरी है। कभी शादी विवाह के लिए तों कभी मान मर्यादा के लिए। सूदखोर महाजन के दरवाजे को खटखटाना ही पडता है। प्रेमचन्द ऋृण ग्रस्त दशा का चित्रण करते हुए लिखते हैं– उसे संतोष था तो यही वह विपत्ति अकेले उसी के सिर पर न थी। प्रायः सभी का यही हाल था। अधिकांश की दशा तो इससे भी बदतर थी।

होरी भी तमाम उम्र कर्जा चुकाने के लिए कडी मेहनत करता है। ऋृण का बोझ अत्यधिक हो जाने के कारण वह मजदूर बन जाता है। वह अन्तिम समय में अपने भाई से कहता है– तो क्या यह मोटा होने के दिन हैं? भाव यह होता है जिन्हें न रिन की सोच है न इज्जत की। इस तरह होरी जीवन के संघर्षों से जूझते जूझते अन्त में प्राण त्याग देता है, और उसका करजा वैसे ही खडा रहता है।

4. शोषण का शिकार दलित वर्ग–

प्रेम चन्द के उपन्यासों में दलित समाज की दयनीय स्थिति प्रकट हुई है। दलित निम्न जाति के लोग न केवल शोषित ही हैं अपितु उन्हें अन्याय का भी शिकार होना पडता है। इस तरह दो तरह की त्रासदी के शिकार हैं। दलित शोषित वर्ग कभी कभी विद्रोह पर भी उतर आता है। प्रेमचन्द ने विद्रोह की भावना का प्रतिपादन अपने उपन्यास के कई पात्रों के माध्यम से किया है। जैसे धनिया, गोबर, रामसेवक आदि। मिल मालिक खन्ना के शोषण के विरुद्ध सब मजदूर मिल कर उसके शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते है तथा हडताल पर चले जाते हैं। इस प्रकार मिल में आग भी लगा दी जाती है। 5

जब होरी गोबर के समक्ष रायसाहब जैसे बडे लोगों का बखान करता है तो गोबर अपना क्षोभ उनके प्रति व्यक्त करते हुए कहता है कि– वे झूठे हैं, मक्कार हैं तथा अपने वर्ग और जमींदार की तुलना करते हुए कहता है कि– हम दाने दाने को मोहताज हैं। देह पर सावित कपडे भी नही हैं। वह स्पष्ट कहता है कि ऐसे लोग जो हमें पेट भर रोटी भी खाने को न दें ऐंसे लोगों के गुणों का बखान करने से कोई लाभ नहीं है। 6

इस तरह प्रेमचन्द गोबर के माध्यम से लगातार पूंजी वाद का विरोध करता हैं। रामसेवक के द्वारा प्रेम चन्द कहलवाते हैं कि इस संसार में गाय बनने से किसी का गुजारा नहीं होता। यदि कोई हक नहीं देता तो उससे अपना हक छीनना पडता है। इस तरह प्रेमचन्द ने उपन्यासों के माध्यम से इस शोषित वर्ग को मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त कर दिया है। प्रेम चन्द कालजयी उपन्यासकार थे उन्होने यथार्थ को प्रस्तुत कर समाज के समक्ष वस्तुस्थिति को लाने का स्तुत्य प्रयास किया है।

5. छूआछूत की समस्या–

प्रेम चन्द ने एक और समस्या को उठाने का प्रयास किया है वह है छूआछूत की समस्या। इस बुराई का दुष्परिणाम यह है कि समाज में परस्पर भाईचारे को ठेस पहुचती है। सभी सार्वजनिक स्थानों जैसे धर्मशाला, छात्रावासों बाग बगीचों मन्दिरों आदिके दरवाजे निम्न वर्ग के लोगों के लिए बंद थे। उनके साथ पशु से भी बदतर व्यवहार किया जाता था। यही कारण है कि प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में अछूतों की दयनीय स्थिति का बडा ही यथार्थ चित्रण किया है। अपने उपन्यास कर्मभूमि में भी प्रेमचन्द ने इस बात को उठाया है।

गोदान में भी इस समस्या को प्रेमचन्द ने उठाया है। उधर दातादीन को अपने व्राह्मणत्व पर बडा गर्व है, लेकिन यही दातादीन होरी को तीस रुपये व्याज पर देता है और उसके दो सौ रुपये बना देता है। इसी दातादीन का बेटा मातादीन सिलिया चमारिन से अवैध प्रेम करता हे। सिलिया अपनी गरीबी के कारण उसके अवैध प्रेम में फंस गई है। यही नहीं वह उससे अपनी काम वासना को तृप्त करता है और गर्भवती होने पर उससे घर का सारा काम करवाता है। सिलिया चमारिन के प्रसंग द्वारा दलितों की समस्या को दूर करना प्रेम चन्द का उद्देश्य है। प्रेम चन्द ने इसका हल सुझाया है– अछूत कन्या को अपनाने वाला या तो स्वयं अछूत बन जाए या उसे भी अपनी जाति का बना ले। यह कैसे सम्भव है कि मातादीन उसका शोषण करता रहा और फिर भी ब्राह्मण बनकर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ कहे। इसके विपरीत सिलिया का पिता हरखु मातादीन को भी चमार बनाना चाहता हैं। वह साफ कहता है–

सिलिया कन्या की जात है। किसी न किसी केघर तो जाएगी ही। हमारी सारी बिरादरी बनने को तैयार है। इस पर हमें कुछ नहीं

कहना है। मगर उसे जो कोई भी रखे, हमारा हो कर रहे, तुम हमें ब्राह्मण नहीं बना सकते, मुदा हम तुम्हें चमार बना सकते हैं। हमें बाह्मण बना दो हमारी सारी बिरादरी बनने को तैयार है। जब यह समरथ नहीं तो फिर तुम भी चमार बनों, हमारे साथ खाओ पिओ हमारे साथ उठा बैठों। हमारी इज्जत लेते हो तो अपना धर्म हमें दो। 7

प्रेमचन्द छूआछूत में विश्वास रखने वालों में से नहीं थे। वे इसके विरोधी थे, वे जानते थे कि यह सामाजिक विषमता है। गांधी जी के हृदय परिवर्तन का सहारा लेकर प्रेम चन्द ने मातादीन का हृदय परिवर्तन किया है तथा उससे कहलवाया है–

मैं ब्राह्मण नहीं, चमार ही रहना चाहता हूं। जो अपना धर्म पाले वही ब्राह्मण है। जो अपने धर्म से मुंह मोड़े वही चमार।

6. ब्राह्मणवाद का विरोध और दलितों के प्रति स्नेह–

प्रेम चन्द ने झूठे फरेबी ब्राह्मणों के प्रति विरोध का स्वर तीव्र किया है। वे ऐसे ब्राह्मणों से सख्त नफरत करते हैं जिनकी करनी और कथनी में भारी अन्तर है। नोखे राम, जैसे अनेक व्राह्मणों के प्रति क्षोभ उनके सभी उपन्यासों में दिखाई देता है।

गोदान में भी दलितों की यथार्थ स्थिति का वर्णन है परन्तु यहां उन्होने कर्म भूमि की तरह आन्दोलन खडा नहीं किया है। 8 गोदान में एक बात उभर कर सामने आइे है कि दलितों को अगर अपने शोषण से मुक्त होना है तो उन्हें स्वयं आगे आना होगा तथा अपनी लडाई खुद लडनी होगी। इस सन्दर्भ में राम सेवक का यह संदेश उल्लेखनीय है–

संसार में गउ बनने से काम नहीं चलता। जितना दबो उतना ही लोग दबाते हैं। भगवान न करे कोई बेइमानी करे। यह बडा पाप है। लेकिन शोषण और न्याय के लिए लड़ना उस से बडा पाप है। 9

इस तरह प्रेमचन्द के उपन्यासों में सर्वत्र दलितों की समस्या को उठाया है तथा दलितों में चेतना भरने का प्रयास किया है। प्रेम चन्द सामाजिक यथार्थोन्मुख आदर्श वादी उपन्यास कार थे तथा उन्होने उसी के ही अनुसार दलित चेतना के लिए सफल प्रयास अपने साहित्य के माध्यम से किया हैं।

सन्दर्भ सूचि–

1 चण्डी प्रसाद हिन्दी उपन्यास का समाज शास्त्रीय विवेचन पृ 56
2 मुंशी प्रेम चन्द गोदान पृ 37
3 उपरोक्त पृ 65
4 उपरोक्त पृ 72
5 मुंशी प्रेमचन्द रंगभूमि पृ 78
6 मुंशी प्रेम चन्द गोदान पृ 112
7 उपरोक्त पृ 79
8 मुंशी प्रेम चन्द कर्म भूमि पृ 143
9 मुंशी प्रेम चन्द गोदान पृ 156